**International Journal of Educational Research and Development**
**www.allinnovationjournal.com**
**Online ISSN: 2664-7095, Print ISSN: 2664-7087**
**Received: 24-10-2025, Accepted: 23-11-2025, Published: 08-12-2025**
**Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 52-53**

# मनोविज्ञानिक एवं दर्शन में पारस्परिक सहसम्बंध

**Dr. Gajendra Pal Singh**
Department of Education, Mewar University, Chittorgarh, Rajsthan, India

**सारांश**
दर्शन भारतीय मुनियों के द्वारा अनुभूत सत्य का परिचय देनेवाला साहित्य है। प्रकृति ने भारतवर्ष को अपनी खेल वाटिका बनाया है। जिसके कारण यहा भौतिक जीवन के निर्वाह करने वाले साधनों की अधिकता प्राचीन काल से रही है। इसलिये यहॉ के विद्वानों ने तपस्या तथा आत्मज्ञान के बल पर अध्यात्मत्व का विशेष चिन्तन कर प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन ही नही किया, अपितु अपने जीवन को उन तत्वों के अनुशीलन द्वारा पुर्वत्व की अरूणिमा पर पहुॅचाया। वास्तविकता यह है कि शिक्षा समाज का जीवन है, उसकी आत्मा है। किसी ने कितना सुन्दर कहा है शारिरिक जीवन के लिए पोषण एवं पुनः उत्पत्ति का जो महत्व है सामाजिक जीवन के लिये उतना ही महत्व शिक्षा का है। शिक्षा लोगो की वृद्धि एवं विकास को सामूहिक हित की ओर अग्रसर करती है। शिक्षा एक भावात्मक एवं रचनात्मक शक्ति है जो सामाजिक व्यवस्था द्वारा प्रभावित भी होती है। वास्तव मे शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था एक दूसरो से सम्बन्धित है। श्रेष्ठ एवं नवीन सामाजिक व्यवस्था के पुनः निर्माण मे शिक्षा को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

**मूल शब्दः** दर्शन, अनुभूत, सत्य, भारतीय, मुनियों, परिचय, साहित्य, प्रकृति, वाटिका, विद्वानों, तपस्या

## प्रस्तावना
दर्शन भारतीय मुनियों के द्वारा अनुभूत सत्य का परिचय देनेवाला साहित्य है। प्रकृति ने भारतवर्ष को अपनी खेल वाटिका बनाया है। जिसके कारण यहा भौतिक जीवन के निर्वाह करने वाले साधनों की अधिकता प्राचीन काल से रही है। इसलिये यहॉ के विद्वानों ने तपस्या तथा आत्मज्ञान के बल पर अध्यात्मत्व का विशेष चिन्तन कर प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन ही नही किया, अपितु अपने जीवन को उन तत्वों के अनुशीलन द्वारा पुर्वत्व की अरूणिमा पर पहुॅचाया।

दर्शन के भैतिक प्रश्न है। हम कौन है? इससे हमारा क्या सम्बन्ध हैं? अनुभव का विश्लेषण किस प्रकार करना चाहिए? जीवन का उद्देश्य क्या है? हम उद्देश्य की सिद्धि के कौन से साधन है? अन्य भिन्न–भिन्न है। इस महत्वपूर्ण प्रश्न के उत्तर देने मे और अन्य समस्याओं को सुलझाने मे भारतवर्ष के विचारको ने जी सिध्घात व्यक्त किये है, उन्ही का विवेचन भारतीय दर्शन की विविध धाराओं मे सम्प्रदायो मे तथा मुख्य ग्रंथो मे किया गया है।

भगवान के मन के रूप मे हमारे अन्दर एक दैविक शक्ति सम्पन्न वस्तु का वास है। हम नित्य प्रति मन की शक्तियों को देखते है, परन्तु उनकी तह तक कभी नही उतरे। यदि हम सावधानी से उसमे उतरे तो ज्ञात होगा कि उसके भीतर शक्तियॉ अर्न्तनिहित है। इसलिए वैदिक ऋषियो ने मन को शिव का संकल्प होने की कभी न समाप्त होने वाली प्रार्थना की है। मन जो भी संकल्प करता है, उसे कार्यरूप मे परिणत कर देता है। मानव मन का संकल्प शिव हो रौद्र न हो, विधायक हो विनाशक न हो कल्याण का स्त्रश्दा हो, विनास का रचयता न हो जितने बड़े–बड़े मंगल कार्यो की संद्यहना हम देखते है, उनके अन्दर यह मन का शिव संकल्प सदा उपस्थित रहता है। किसी भी कार्य को व्यवहारिक स्तर से जाने से पहले मानसिक और बैचारिक। स्थिति से होकर गुजरना पड़ता है। यानि की मनसावाचा–कर्मणा का सिध्घात आता है।

उपनिषदो का भी यही कहना है कि व्यक्ति मन से जो चिन्तन करता है, उसी को वचनो के द्वारा सम्मुख रखता है, और आगे चलकर उसे ही कायर के रूप मे निश्पन्न करता है। आप कोई भी शुभ कार्य का संकल्प करते है तो सबसे पहले मन के संकल्प को कल्याणकारी बनाइये वही उचित है। यानि कि स्थूल के अपेक्षा सूक्ष्म की शक्ति–विलक्षण व्यापक है। जो वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होती है उसकी शक्ति उतनी ही ज्यादा होती है।

होमियोपैथिक औषधि मे यही सिद्धान्त काम करता है जो दवा जितनी सूक्ष्म होती है उसका असर उतना ही अधिक व लम्बे समय तक होता है। बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः भारीवका इस कथन और दृष्टिपात करता है।

मन अणु माना गया है। उसकी शक्ति आपविक शक्ति है। वर्तमान की भाषा मे वह एटम बम की तरह कार्य करता है। बम का प्रयोग नुकसान के लिए ही हो रहा है। परन्तु वह विद्यायिनी शक्ति के उत्पादन के लिये भी लगाया जा सकता है और आज के वैज्ञानिक उसी उपाय की खोज मे लगे है। जिससे वह संचालित शक्ति हानि न करके लाभ प्रदान करे। मन की भी वैसी ही दशा है। वह हमारे शरीर के भीतर एटम बम ही है। वैदिक ऋषियोंने मन की दो शक्तियों पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। एक शक्ति है–नयन शक्ति और दूसरी है नियमन शक्ति।

मन मे बड़ी शक्ति भरी हुई है। मन तो जीता जागता डायनमो है, जिसमे अपनी इच्छा के अनुसार बिजली पैदा की जा सकती है। मन मे जो इच्छा होती है एक दिन पूरी हो जाती है। मन जितना शुद्ध उतनी ही शक्ति उसकी इच्छा मेब नी रहेगी। प्राचीन ऋषि मुनियो की वो बाते हमे पुराणो में मिलती है। मन उनका इतना सात्विक था। कि जिस वस्तु की उन्हे इच्छा होती वह तुरन्त पैदा हो जाती थी। आज हम देखते है कि मन कितना अशुद्ध हो गया। जिससे वह काम नही कर सकता इसे हम नकार नही सकते कि उसमे असीम शक्ति भरी हुई है।

मन को स्थिर अवस्था में करने के लिये हमे दृढ़ निश्चय करना पाड़ेगा। एक तो वह खुद चंचल है जविश्ठ ढहरा फिर यदि वह चंचल विषय की ओर लगाया जायेगा तब और भी चंचल हो उठेगा। तूफान के समय मे मल्लाह अपनी नाव को ठोस मजबूत जमीन मे खूटो को गाड़कर हिलाता है। यदि जमीन दलदली हो तो न तो नाव का पता चलेगा न मल्लाह का दोनो ही किनारे हो जायेंगे। ठीक यही स्थिति मन की है। यदि दृढ़ निश्चय पर उसे हम नही हिलायेंगे तो वह हमे कही का भी नही रखेगा। न इस पार लगेगा न उस पार। वह तो अथाग सागर मे लेकर डूबो देगा। इसलिए संतो महंतो का कहना है कि मन को बाधने के लिए दृढ़ रस्सी चाहिये उसे हिलाने के लिये दृढ़ आधार चाहिये उसकी पकड़ रखने के लिये दृढ़ प्रलोभन चाहिये। तभी वह काबू

मे आ सकता है। उसका उपद्रव करने का जो स्वभाव है है, उसे दूर भगा दो। उसे शुभ कार्यो मे लगाओ यदि ऋषियो संतो–महंतो का सामुहिक कथन है।

मन का उपयोग हमे किस प्रकार करना चाहिए। इसके उपाय तो बहुत कठिन है। परन्तु अभ्यास से सब वस्तु साध्य हो नही सकती। उसको पहले बाहर जाने दीजिये जितना बाहर जायेगा उतना ही यह क्षीणशक्ति होनावीर्य होता जायेगा। इसकी शक्ति को अन्दर ही अन्दर सांचित की जिए। किसी भी इष्ट देवता मे लगाये। अनश्वर देवता के साथ यह खेला करेगा। इसका लालची हो गया तो वो सदा पिताम्बरधारी मयूर पृच्छाधारी को निरखा करेगा। अगर मधुर शब्दो को सुनने की इच्छा है तो मधुर (मोए) मुरली की धुन सुना करो।

अगर हाथ पाव अपने अपने काम के लिए उतावले हो तो भगवान के काम मे लगाए। यदि नाक से सुगन्धित वस्तु के सूघने की इच्छा है तो नाक से तो वनमाली के शरीर–स्पर्श से परिचित होनेवाली पुष्पमाला या तुलसी की गन्ध का आनन्द लिया करो। इन सभी वस्तुओ के बारे मे सब जानते है कि ये नियन्ता की है। जो सभी का आधार है तथा सर्वन रहनेवाला है। यदि ऐसे व्यक्ति मे हमारा मन लग गया तो कभी भी उसकी शक्ति क्षीण नही होगी। क्या उसे कभी विचलित होना पड़ेगा कभी नही। इस प्रकार परमआनन्द की प्राप्ति ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

मनुष्य सुख प्राप्त करने के लिये पागल है। वह इधर–उधर दौड़ता है। वह बाहरी पदार्थो मे ही सुख ढूढ़ने मे लगा हुआ है। वह नही जानता परम आनन्द के लिये मन को आत्मा के साथ जोड़ दो और उस आत्मा ज्ञान से ही वो मिलता है। मानव की तुलना उस कस्तूरी मृग से की गयी है जो कस्तूरी की तलाश मे पागल होकर उसे ढूढ़ने के लिये जंगल में इधर–उधर घूमता है। वह नही जानता कि कस्तूरी उसकी नाभि मे ही उपस्थित है।

शिक्षा का कार्य अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा प्रणाली को समाज की बदलती हुई परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन होते रहना चाहिए। जो शिक्षा समाज की जरूरतो एवं आवश्यक परिस्थितियों के अनुसार बदलते नही, वह नयी एवं अच्छी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण नही कर सकती। डा0 श्री मली के शब्दो के अनुसार यदि शिक्षा लोगो के सामाजिक गठन तथा आर्थिक जीनव मे होने वाले पतिवर्तनो तथा विकासो के अनुसार नही चल सकती, तो वह सजीव–शक्ति के रूप मे नही रह सकती, तो वह। अतः शिक्षा को बदलते हुए समाज के अनुसरण मे रहना चाहिए। जार्ज एस0 काउटस ने ठीक कहा है, सामाजिक पुर्निर्माण शक्ति के रूप मे शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था की रचनात्मक एवं सजीव शक्तियों के साथ चलना चाहिए।

वास्तविकता यह है कि शिक्षा समाज का जीवन है, उसकी आत्मा है। किसी ने कितना सुन्दर कहा है शारिरिक जीवन के लिए पोषण एवं पुनः उत्पत्ति का जो महत्व है सामाजिक जीवन के लिये उतना ही महत्व शिक्षा का है। शिक्षा लोगो की वृद्धि एवं विकास को सामूहिक हित की ओर अग्रसर करती है। शिक्षा एक भावात्मक एवं रचनात्मक शक्ति है जो सामाजिक व्यवस्था द्वारा प्रभावित भी होती है। वास्तव मे शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था एक दूसरो से सम्बन्धित है। श्रेष्ठ एवं नवीन सामाजिक व्यवस्था के पुनः निर्माण मे शिक्षा को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

आज कल हम अपने चारो ओर क्या देखते है? इसका जबाब है– निर्दयता, हिंसा, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, प्रान्तीयता, सकीर्णता तथा भिन्न–भिन्न अनिश्टकारीवाद। रिश्वत भ्रष्टाचार असीम लालच, कठोर स्वार्थभावना, घृणा तथा पारस्परिक सन्देह का बोलबाला है। हम वर्तमान मे संकटयुग मे रह रहे है। युद्ध के बादल पूरी मानवता पर मड़रा रहे है। युद्ध की एक छोटी सी चिन्गारी सम्पूर्ण मानव जाति मे युद्ध की लपटे भड़का सकती है। युद्ध का खतरा मोल लेना मानवता के विनाश या विध्वंस के वीज बोना है। संसार की वर्तमान दशा तनाव और वैचेनी की दशा है। डा0 राधाकृष्ण के शब्दो मे, विचारशील व्यक्तियों के लिए विश्व की वर्तमान दशा मन व्याकुलता एवं चेतावनी का विषय है। यह मान का विषय है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी ने विज्ञान और तकनीकि की अद्भुत उपलब्धियों को विकसित किया है और संसार के अन्तिम छोर तक विस्तृत किया है। तथा जो सितारो से आगे जा सकता है और विश्व के अन्तिम छोर तक जा सकता है इस दृष्टिकोण से हमारी सभ्यता अनुपम है क्योंकि यह हमें विश्वव्यापी व्यवस्था का आधार प्रदान करती है। हमें व्याकुलता इस बात की होती है कि अर्न्तराष्ट्री संगठनों के द्वारा समता और स्वतंत्रता पर आधारित विश्वव्यापी सामाजिक–व्यवस्था की स्थापना के लिए किये गये हमारे प्रयास असफल हो गये है। जबकि हम जानते है कि संसार एक है और राजनीतिक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विभाजनों के बावजूद प्रत्येक का भाग दूसरों के साथ संबधित है परन्तु फिर भी हम इसे गम्भीरता से अनुभव नही करते। हम केवल व्याकुल ही नही बल्कि दूसरों की खतरनाक विवेकहीन तथा असभ्य क्रियायो को देखकर हमे चेतावनी भी मिलती है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार–एन.आर. स्वरूप सक्सेना
2. भारतीय शिक्षा दर्शन–डॉ. आर. ए. शर्मा
3. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान– प्रो. एस.पी. गुप्ता
4. गूगल ब्राउजर